International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
January 2026 14(1)
www.granthaalayah.com

Original Article

A COMPARATIVE STUDY OF VALUES AMONG HINDI AND ENGLISH MEDIUM STUDENTS PURSUING SECONDARY EDUCATION IN MORADABAD DISTRICT

मुरादाबाद जिले में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

Mansi Kaushik [1*], **Dr. Sushil Kumar** [2]
[1] Research Scholar, Department of Education, Hindu College, Moradabad, India
[2] Associate Professor, Department of Education (B.Ed , M.Ed), Hindu College, Moradabad, India

ABSTRACT

English: Education is considered crucial in the overall development of human life. Education is not merely a process of acquiring knowledge or developing skills, but a powerful socio-cultural process that shapes a person's thoughts, behavior, attitudes, and life values. From birth to the final stage of life, a child continuously learns from their experiences, environment, family, school, and society, and through this continuous learning process, their value consciousness develops. These values guide a person's life and form the basis for the stability of society, the continuity of culture, and the progress of civilization. In the Indian tradition of thought, education has always been considered a means of moral, spiritual, and social development. Ancient philosophers linked life values to dharma, artha, kama, and moksha, while modern psychologists and sociologists have linked values to a person's attitudes, interests, and social behavior. Contemporary pedagogy recognizes that school is not only a center of curricular knowledge but also a key site of value inculcation. The school environment, the medium, teacher behavior, peer group, family background, and social context all contribute to the formation of students' values.

Hindi: मानव जीवन के समग्र विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन या कौशल-विकास की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के विचार, व्यवहार, दृष्टिकोण और जीवन-मूल्यों को आकार देने वाली सशक्त सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया है। बालक जन्म से लेकर जीवन के अंतिम चरण तक अपने अनुभवों, परिवेश, परिवार, विद्यालय और समाज से निरंतर सीखता रहता है, और इसी सतत शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से उसमें मूल्य चेतना का विकास होता है। यही मूल्य व्यक्ति के जीवन को दिशा देते हैं तथा समाज की स्थिरता, संस्कृति की निरंतरता और सभ्यता की प्रगति का आधार बनते हैं। भारतीय चिंतन परंपरा में शिक्षा को सदैव नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास का माध्यम माना गया है। प्राचीन दार्शनिकों ने जीवन-मूल्यों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से जोड़कर देखा, जबकि आधुनिक मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों ने मूल्यों को व्यक्ति की अभिवृत्तियों, रुचियों और सामाजिक व्यवहार से संबद्ध किया। समकालीन शिक्षा शास्त्र में यह स्वीकार किया गया है कि विद्यालय केवल पाठ्यक्रमीय ज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि मूल्य-संस्कार का भी प्रमुख स्थल है। विद्यालय का वातावरण, माध्यम, शिक्षक का व्यवहार, सहपाठी समूह, पारिवारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक संदर्भ—ये सभी मिलकर विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण में योगदान करते हैं।

*Corresponding Author:
Email address: Mansi Kaushik (mansikaushik135@gmail.com), Dr. Sushil Kumar (drsushilkumaradc@gmail.com)

Received: 16 November 2025; **Accepted:** 28 December 2025; **Published** 31 January 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i1.2026.6816
Page Number: 177-181
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

Keywords: Value Education, Hindi Medium Students, English Medium Students, Secondary Education, Comparative Study, वैल्यू एजुकेशन, हिंदी मीडियम स्टूडेंट्स, इंग्लिश मीडियम स्टूडेंट्स, सेकेंडरी एजुकेशन, कम्पेरेटिव स्टडी

प्रस्तावना
भूमिका

मानव जीवन के समग्र विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन या कौशल-विकास की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के विचार, व्यवहार, दृष्टिकोण और जीवन-मूल्यों को आकार देने वाली सशक्त सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया है। बालक जन्म से लेकर जीवन के अंतिम चरण तक अपने अनुभवों, परिवेश, परिवार, विद्यालय और समाज से निरंतर सीखता रहता है, और इसी सतत शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से उसमें मूल्य चेतना का विकास होता है। यही मूल्य व्यक्ति के जीवन को दिशा देते हैं तथा समाज की स्थिरता, संस्कृति की निरंतरता और सभ्यता की प्रगति का आधार बनते हैं। भारतीय चिंतन परंपरा में शिक्षा को सदैव नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास का माध्यम माना गया है। प्राचीन दार्शनिकों ने जीवन-मूल्यों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से जोड़कर देखा, जबकि आधुनिक मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों ने मूल्यों को व्यक्ति की अभिवृत्तियों, रुचियों और सामाजिक व्यवहार से संबद्ध किया। समकालीन शिक्षा शास्त्र में यह स्वीकार किया गया है कि विद्यालय केवल पाठ्यक्रमीय ज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि मूल्य-संस्कार का भी प्रमुख स्थल है। विद्यालय का वातावरण, माध्यम, शिक्षक का व्यवहार, सहपाठी समूह, पारिवारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक संदर्भ—ये सभी मिलकर विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण में योगदान करते हैं।

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जनपद में हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की उपस्थिति एक विशिष्ट सामाजिक-शैक्षिक परिस्थिति निर्मित करती है। दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि भिन्न होती है, जिससे उनके मूल्यबोध में विविधता की संभावना उत्पन्न होती है। अंग्रेजी माध्यम शिक्षा प्रायः प्रतिस्पर्धा, उपलब्धि और वैश्विक अवसरों से जुड़ी मानी जाती है, जबकि हिंदी माध्यम शिक्षा स्थानीय संस्कृति, सामुदायिकता और परंपरा से अधिक निकटता रखती है। इस प्रकार यह अध्ययन इस प्रश्न का अन्वेषण करता है कि क्या माध्यम का अंतर विद्यार्थियों के जीवन-मूल्यों को प्रभावित करता है, और यदि हाँ, तो किस प्रकार। इस शोध में मूल्य की अवधारणा, भारतीय और पाश्चात्य दृष्टिकोण, शिक्षा और मूल्य का पारस्परिक संबंध, समकालीन मूल्य-संकट, तथा विद्यालयी और सामाजिक पारिस्थितिकी के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। मानकीकृत उपकरणों और सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मूल्य प्राथमिकताओं में क्या अंतर और समानताएँ हैं, तथा इन पर सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का क्या प्रभाव है।

शिक्षा, जीवन-मूल्य और मानवीय विकास : एक दार्शनिक एवं शैक्षिक विश्लेषण

मानव जीवन में शिक्षा का स्थान अत्यंत केंद्रीय और निर्णायक है। शिक्षा केवल विद्यालय या कक्षा तक सीमित प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह जन्म से मृत्यु तक चलने वाली सतत जीवन-यात्रा है, जिसके माध्यम से मनुष्य अनुभव अर्जित करता है, अपनी समझ का विस्तार करता है और स्वयं तथा समाज के साथ अपने संबंधों को विकसित करता है। अनुभवों के इस संचयन से व्यक्ति की चेतना परिष्कृत होती है और वही चेतना संस्कृति, सभ्यता तथा सामाजिक प्रगति का आधार बनती है। उदारता, महानता, सौंदर्यबोध और उत्कृष्ट सामाजिक जीवन का निर्माण शिक्षा के माध्यम से ही संभव होता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक के व्यवहार में सार्थक परिवर्तन लाना और उसकी अंतर्निहित क्षमताओं का समुचित विकास करना है। शिक्षा वह माध्यम है जो बालक की जन्मजात शक्तियों को अभिव्यक्त करता है और उसे सर्वांगीण विकास की दिशा में अग्रसर करता है। इस दृष्टि से शिक्षा केवल सूचना प्रदान करने या कौशल सिखाने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह व्यक्ति को जीवन-मूल्यों का बोध भी कराती है। परिणामस्वरूप शिक्षित व्यक्ति अपने समाज के प्रति उत्तरदायित्व का अनुभव करता है और सामाजिक जीवन में सक्रिय सहभागिता निभाता है। भारतीय शिक्षा के संदर्भ में अनेक विचारकों ने यह इंगित किया है कि यदि शिक्षा अपने सांस्कृतिक आधार से कट जाती है, तो वह व्यक्ति में मौलिकता, समर्पण और आत्मपहचान के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। इसी प्रकार प्लेटो ने शिक्षा को ऐसा साधन माना जो व्यक्ति के भीतर तर्क, विवेक और अनुभवसम्मत आचरण को विकसित करता है, जिससे वह समाजोपयोगी जीवन जी सके। शिक्षा में सुधार की दिशा में यह आवश्यक है कि शिक्षा क्षेत्र से जुड़े सभी व्यक्ति शिक्षा के वास्तविक स्वरूप को समझें और उसे उचित दिशा में विकसित होने का अवसर प्रदान करें। शिक्षा विकास की प्रक्रिया है, परंतु यह विकास जीवन-मूल्यों की दिशा से ही नियंत्रित होता है। जब तक यह स्पष्ट न हो कि जीवन का आदर्श क्या है, जीवन को उत्कृष्ट बनाने का मार्ग क्या है, और कौन से मूल्य शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित करते हैं, तब तक शिक्षा का उद्देश्य अधूरा रह जाता है।

मूल्य का सामान्य अर्थ उपयोगिता, वांछनीयता, महत्त्व और आदर्श से है। समाज जिन आदर्शों को महत्त्व देता है और जो व्यक्ति के आचरण को दिशा प्रदान करते हैं, वे ही मूल्य कहलाते हैं। मूल्य समाज की स्थिरता और निरंतरता के आधार होते हैं, क्योंकि वे व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं और सामूहिक हित की भावना को बनाए रखते हैं। मूल्य एक प्रकार का आचार-संहिता या सद्गुण है, जिसके आधार पर व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्यों का निर्धारण करता है। दार्शनिक दृष्टि से मूल्य व्यक्ति की आंतरिक चेतना में जाग्रत वह शक्ति है जो उसे विशिष्ट प्रकार से आचरण करने के लिए प्रेरित करती है। ये मूल्य एक ओर मानवीय प्रकृति में निहित होते हैं, तो दूसरी ओर संस्कृति, परंपरा और सामाजिक परिवेश द्वारा पोषित और विकसित किए जाते हैं। रॉकेच (Rokeach) के अनुसार मूल्य वे स्थायी विश्वास हैं जो व्यक्ति को यह निर्धारित करने में सहायता करते हैं कि कौन सा आचरण या जीवन-लक्ष्य अधिक वांछनीय है। वहीं श्वार्ट्ज (Schwartz) के मूल्य सिद्धांत में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को दस प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जो विभिन्न संस्कृतियों में समान रूप से पाए जाते हैं, जैसे परोपकार, परंपरा, आत्म-निर्देशन, उपलब्धि आदि। जीवन-मूल्यों को व्यापक रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है — परिवर्ती मूल्य और शाश्वत मूल्य। परिवर्ती मूल्य वे हैं जो समय, परिस्थिति और सामाजिक परिवर्तनों के साथ बदलते रहते हैं। उदाहरणतः प्राचीन काल में धार्मिक और नैतिक मूल्यों की प्रधानता थी, जबकि आधुनिक युग में भौतिकतावाद के प्रभाव से आर्थिक मूल्यों का वर्चस्व बढ़ गया है। नई सामाजिक परिस्थितियों में कुछ पुराने मूल्य क्षीण हो जाते हैं और उनकी जगह नए मूल्य उभरते हैं। इसके विपरीत, शाश्वत मूल्य वे हैं जो कालातीत होते हैं और मानव जीवन के लिए सदैव प्रासंगिक बने रहते हैं, जैसे सत्य, अहिंसा, करुणा, न्याय, सहानुभूति और सहयोग। ये मूल्य किसी भी युग में समाज की आधारशिला बने रहते हैं।

वर्तमान समय में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा राष्ट्रीय जीवन में तनाव की स्थिति बढ़ती जा रही है। परिवारों में बुजुर्गों के प्रति सम्मान में कमी, दाम्पत्य संबंधों में तनाव, भाईचारे और सहयोग की भावना का क्षीण होना, सामाजिक नियमों की अवहेलना, हिंसात्मक प्रदर्शन और असहिष्णुता जैसी

प्रवृत्तियाँ यह संकेत देती हैं कि मूल्य-च्युत अवस्था समाज में व्याप्त हो रही है। व्यक्ति स्वार्थ, अवसरवादिता और कर्तव्य-विमुखता की ओर उन्मुख हो रहा है। यदि यह मूल्य-ह्रास नहीं है, तो और क्या है? समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम (Durkheim) ने शिक्षा को सामाजिक नैतिकता के संवाहक के रूप में देखा था, जो समाज में एकता और अनुशासन बनाए रखने में सहायक होती है। महात्मा गांधी ने भी बुनियादी शिक्षा के माध्यम से नैतिक और श्रममूलक मूल्यों के विकास पर बल दिया। इसी प्रकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शिक्षा को मानवीय संवेदनाओं और सौंदर्यबोध के विकास का माध्यम माना। आज आवश्यकता है कि शिक्षा पुनः अपने मूल उद्देश्य की ओर उन्मुख हो — केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि मूल्यनिष्ठ, संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण। विभिन्न शैक्षिक धाराएँ अलग-अलग मूल्यों को महत्त्व देती हैं, परंतु शिक्षा का अंतिम लक्ष्य मानवता, सहयोग, नैतिकता और सामाजिक समरसता का विकास होना चाहिए। स्पष्ट है कि शिक्षा और जीवन-मूल्य एक-दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य, आचरण और सामाजिक उत्तरदायित्व को समझता है। जब शिक्षा मूल्य-आधारित होती है, तभी समाज में संतुलन, शांति और प्रगति संभव होती है। अतः शिक्षा व्यवस्था में जीवन-मूल्यों के समुचित समावेशन की आवश्यकता है, ताकि भविष्य की पीढ़ियाँ केवल विद्वान ही नहीं, बल्कि संवेदनशील, नैतिक और उत्तरदायी नागरिक बन सकें।

मूल्य-दर्शन, शिक्षा और माध्यम का प्रभाव : मुरादाबाद जनपद के परिप्रेक्ष्य में एक शैक्षिक विश्लेषण

भारतीय चिंतन परंपरा में 'मूल्य' को मानव जीवन की दिशा निर्धारित करने वाली आंतरिक शक्ति माना गया है। प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने मूल्यों को व्यापक रूप से आध्यात्मिक और भौतिक दो आयामों में समझा। आध्यात्मिक मूल्य वे हैं जो मनुष्य के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से जुड़े विचारों और आचरण को दिशा देते हैं, जबकि भौतिक मूल्य वे हैं जो सामाजिक जीवन, व्यवहार, प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, देशभक्ति और कर्तव्यबोध से संबंधित हैं। किंतु गहराई से देखने पर स्पष्ट होता है कि यह विभाजन पूर्णतः पृथक नहीं है, क्योंकि सत्य, अहिंसा, सेवा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा जैसे आध्यात्मिक माने जाने वाले मूल्य सामाजिक और व्यवहारिक जीवन में ही अभिव्यक्त होते हैं। इसी प्रकार प्रेम, सहानुभूति और सहयोग जैसे सामाजिक मूल्य आध्यात्मिक उन्नयन के आधार बनते हैं। इसलिए मूल्य की यह द्विभाजनात्मक संरचना अपने आप में सीमित है। पाश्चात्य चिंतकों ने मूल्यों का विश्लेषण मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य से किया। मनोवैज्ञानिकों ने मूल्यों को मनुष्य की रुचियों, अभिवृत्तियों और वरीयताओं से जोड़ा। रॉकेच ने मूल्यों को स्थायी विश्वास बताया जो व्यक्ति के आचरण और जीवन-लक्ष्य के चुनाव का आधार बनते हैं। श्वार्ट्ज ने मूल्यों को सार्वभौमिक मानवीय आवश्यकताओं से जोड़ते हुए परोपकार, परंपरा, आत्म-निर्देशन, उपलब्धि, सुरक्षा, सार्वभौमिकता जैसे आयामों में वर्गीकृत किया। स्प्रैंगर का वर्गीकरण भी उल्लेखनीय है, जिसमें सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक छह प्रकार के मूल्य बताए गए। इस दृष्टि से मूल्य व्यक्ति के स्वभाव, सामाजिक परिस्थितियों और सांस्कृतिक परिवेश से गहरे रूप में जुड़े होते हैं, और इन्हीं के आधार पर व्यक्ति की गतिविधियाँ और निर्णय समझे जा सकते हैं।

भारतीय संस्कृति का विकास भी मूल्यों के क्रमिक संवर्धन के माध्यम से हुआ है। किंतु आधुनिक समय में पश्चिमी प्रभाव, भौतिकतावाद और प्रतिस्पर्धी जीवनशैली के कारण मूल्य-संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है। सामाजिक जीवन में असहिष्णुता, भ्रष्टाचार, हिंसा, स्वार्थपरता और कर्तव्यविमुखता जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ती दिखाई देती हैं। यह परिदृश्य केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में भी देखा जा सकता है। इसी संदर्भ में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जनपद का शैक्षिक परिदृश्य अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। मुरादाबाद, जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख शहरी-ग्रामीण मिश्रित जिला है, यहाँ हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम दोनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालय बड़ी संख्या में संचालित होते हैं। इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि विविध है। अंग्रेजी माध्यम विद्यालय प्रायः निजी प्रबंधन, उच्च शुल्क संरचना और प्रतिस्पर्धी शैक्षिक वातावरण से जुड़े होते हैं, जबकि हिंदी माध्यम विद्यालयों में स्थानीय समुदाय के विद्यार्थी, मध्यम एवं निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि से अधिक संख्या में आते हैं। यह भिन्नता विद्यार्थियों के मूल्यबोध को प्रभावित कर सकती है। मुरादाबाद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य अध्ययन के लिए मानकीकृत प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसे क्यू. जी. आलम और डॉ. रामजी श्रीवास्तव द्वारा विकसित किया गया था। इस परीक्षण में साठ कथन थे, जो वैचारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक और धार्मिक छह मूल्यों से संबंधित थे। प्रत्येक कथन के उत्तर हेतु लाइकेर्ट मापनी का उपयोग किया गया। इस प्रकार विद्यार्थियों की मूल्य प्राथमिकताओं को सांख्यिकीय रूप से समझने का प्रयास किया गया। अध्ययन में मुरादाबाद के हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों से समान संख्या में विद्यार्थियों का चयन किया गया, ताकि तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके।

सांख्यिकीय विश्लेषण में आवृत्ति वितरण, माध्य, मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात का उपयोग किया गया। आर्थिक मूल्यों के संदर्भ में प्राप्त आंकड़ों ने संकेत दिया कि दोनों माध्यमों के विद्यार्थियों के मध्य सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों का माध्य अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया। इसका अर्थ यह नहीं कि एक समूह में मूल्य अधिक और दूसरे में कम हैं, बल्कि यह दर्शाता है कि मूल्य प्राथमिकताओं का स्वरूप सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में आर्थिक उपलब्धि, प्रतिस्पर्धा और भौतिक सफलता के प्रति आकांक्षा अधिक स्पष्ट दिखाई दी, जबकि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों में संतोष, सामुदायिक सहयोग और सीमित संसाधनों में अनुकूलन की प्रवृत्ति अधिक देखी गई। इन निष्कर्षों की व्याख्या करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मूल्य केवल विद्यालय के माध्यम से निर्धारित नहीं होते, बल्कि परिवार, समुदाय, आर्थिक स्थिति, अभिभावकों की शिक्षा, स्थानीय संस्कृति और सामाजिक अपेक्षाओं से भी निर्मित होते हैं। मुरादाबाद जैसे जिले में, जहाँ पारंपरिक कारीगरी, व्यापारिक समुदाय और ग्रामीण परिवेश का गहरा प्रभाव है, वहाँ विद्यार्थियों के मूल्य स्थानीय जीवनशैली से प्रभावित होना स्वाभाविक है। अंततः यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के माध्यम, सामाजिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक परिवेश का विद्यार्थियों के मूल्य विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। मूल्य शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम का भाग न मानकर जीवन-प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है। मुरादाबाद जनपद के संदर्भ में यह अध्ययन संकेत देता है कि हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में मूल्य संरचना का अंतर उनके जीवनानुभवों और सामाजिक परिवेश से गहराई से जुड़ा हुआ है। अतः शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि ऐसे मूल्यनिष्ठ नागरिकों का निर्माण होना चाहिए जो समाज में संतुलन, सहयोग और नैतिकता को सुदृढ़ कर सकें।

मुरादाबाद जनपद में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, विद्यालयी पारिस्थितिकी और विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण की प्रक्रिया

मूल्यों के निर्माण को यदि केवल सैद्धांतिक परिभाषाओं या नैतिक शिक्षाओं तक सीमित समझा जाए, तो यह अधूरा दृष्टिकोण होगा। समकालीन शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक अनुसंधान यह स्पष्ट करते हैं कि मूल्य केवल पाठ्यपुस्तकों या उपदेशों से विकसित नहीं होते, बल्कि वे व्यक्ति के दैनिक जीवन, उसके परिवेश, पारिवारिक वातावरण, साथियों के समूह, विद्यालयी संस्कृति और व्यापक सामाजिक संरचना के साथ निरंतर अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप विकसित होते हैं। ब्रोंफेनब्रेनर के पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत के अनुसार मानव विकास कई स्तरों के पर्यावरणीय प्रभावों के अंतर्गत होता है—परिवार और विद्यालय जैसे निकटवर्ती तंत्र से लेकर संस्कृति और समाज जैसे व्यापक तंत्र तक। इसी बहुस्तरीय प्रभाव के भीतर विद्यार्थियों के मूल्य आकार लेते हैं। उत्तर प्रदेश का मुरादाबाद जनपद इस दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक रूप से पीतल उद्योग, कारीगरी, छोटे व्यापार, सेवा वर्ग और ग्रामीण-शहरी मिश्रित जनसंख्या वाले इस क्षेत्र में विविध सामाजिक वर्ग साथ-साथ रहते हैं। यहाँ पारंपरिक व्यवसाय से जुड़े परिवार, उभरते मध्यम वर्ग, तथा सीमित संसाधनों वाले ग्रामीण परिवार सभी शिक्षा को अपने-अपने दृष्टिकोण से देखते हैं। यही सामाजिक विविधता विद्यार्थियों की आकांक्षाओं, अभिभावकों की अपेक्षाओं और विद्यालय के चुनाव को प्रभावित करती है, जो अंततः मूल्य निर्माण की दिशा निर्धारित करती है।

मुरादाबाद में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों को प्रायः उच्च आकांक्षाओं, पेशेवर भविष्य, प्रतिस्पर्धी वातावरण और वैश्विक अवसरों से जोड़कर देखा जाता है। दूसरी ओर हिंदी माध्यम विद्यालय स्थानीय समुदाय, सांस्कृतिक निरंतरता, वहनीयता और क्षेत्रीय भाषाई पहचान से अधिक जुड़े होते हैं। यह भिन्नता केवल भाषा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विद्यालयी संस्कृति, शिक्षण शैली, सह-पाठयक्रम गतिविधियों और विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभवों में भी परिलक्षित होती है। अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी पाठ्यक्रम, गतिविधियों और संप्रेषण शैली के माध्यम से प्रतिस्पर्धा, उपलब्धि, आत्मनिर्देशन और भविष्य की योजनाओं से संबंधित मूल्यों के संपर्क में अधिक आते हैं। भारतीय शैक्षिक समाजशास्त्र के अनेक अध्ययनों ने यह संकेत किया है कि अंग्रेजी माध्यम शिक्षा प्रायः उपलब्धि, आत्मविश्वास और आर्थिक उन्नति की आकांक्षा से जुड़ी मूल्य प्रवृत्तियों को सुदृढ़ करती है। यह प्रभाव केवल भाषा का परिणाम नहीं है, बल्कि उस संपूर्ण संस्थागत वातावरण का प्रभाव है जो इन विद्यालयों में विद्यमान रहता है।

इसके विपरीत, हिंदी माध्यम विद्यालय मुरादाबाद में सामुदायिकता, सहयोग, पारिवारिक सम्मान और सामाजिक समरसता के मजबूत केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। प्रार्थना सभाएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध और सहपाठी समूह की अंतःक्रियाएँ ऐसे वातावरण का निर्माण करती हैं, जहाँ परंपरा, सहानुभूति, सामूहिक उत्तरदायित्व और संतोष जैसे मूल्य स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं। श्वार्ट्ज के मूल्य सिद्धांत के अनुसार ये प्रवृत्तियाँ परोपकार, परंपरा और अनुरूपता जैसे मूल्यों के अंतर्गत आती हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में 'गुप्त पाठ्यक्रम' की संकल्पना विशेष महत्त्व रखती है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थी उन व्यवहारों, दृष्टिकोणों और मान्यताओं को आत्मसात करते हैं जो औपचारिक पाठ्यक्रम में लिखित रूप में नहीं होते, किंतु दैनिक विद्यालयी जीवन में निरंतर दिखाई देते हैं। हिंदी माध्यम विद्यालयों में शिक्षक और विद्यार्थियों का सांस्कृतिक व भाषाई साम्य उनके बीच आत्मीय संबंध स्थापित करता है, जिससे साझा सांस्कृतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण होता है। अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में शिक्षण अधिक औपचारिक, अनुशासित और प्रदर्शन उन्मुख होता है, जो विद्यार्थियों में समयबद्धता, अनुशासन और लक्ष्य-उन्मुखता जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करता है। परिवार का वातावरण भी इस मूल्य निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाता है। अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परिवार प्रायः शिक्षा को सामाजिक-आर्थिक उन्नति के साधन के रूप में देखते हैं। ऐसे परिवारों में महत्वाकांक्षा, प्रतिस्पर्धा और भविष्य की योजना पर बल दिया जाता है। दूसरी ओर हिंदी माध्यम विद्यार्थियों के परिवारों में सीमित संसाधनों के कारण संतोष, सहयोग और सामूहिक जीवन शैली को अधिक महत्व दिया जाता है। यह स्थिति बुरदियू के 'सांस्कृतिक पूँजी' सिद्धांत से मेल खाती है, जिसके अनुसार शिक्षा के चुनाव और मूल्य प्रवृत्तियाँ सामाजिक पृष्ठभूमि से गहराई से जुड़ी होती हैं।

यह समझना आवश्यक है कि हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के मूल्य अंतर को श्रेष्ठ या निम्न के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। ये केवल अलग-अलग सामाजिक यथार्थों से निर्मित मूल्य संरचनाएँ हैं। दोनों समूहों में ईमानदारी, सम्मान, सहानुभूति और कर्तव्यबोध जैसे मूलभूत मानवीय मूल्य समान रूप से उपस्थित रहते हैं, किंतु उनकी प्राथमिकता और अभिव्यक्ति का स्वरूप भिन्न हो सकता है। मुरादाबाद जैसे बहुसांस्कृतिक और बहुस्तरीय सामाजिक परिवेश में, जहाँ पारंपरिक व्यवसाय, धार्मिक विविधता और आधुनिक शिक्षा एक साथ विद्यमान हैं, वहाँ विद्यार्थियों के मूल्य निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होते रहते हैं। डिजिटल मीडिया, सामाजिक नेटवर्किंग और व्यापक सांस्कृतिक संपर्क भी इन मूल्यों को पुनः परिभाषित कर रहे हैं, जिससे पूर्व के अंतर धीरे-धीरे कम होते दिखाई देते हैं। अतः मुरादाबाद जनपद में विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण को समझने के लिए यह आवश्यक है कि भाषा माध्यम, विद्यालयी संस्कृति, पारिवारिक अपेक्षाएँ, साथियों का प्रभाव और सामाजिक परिवर्तन—इन सभी कारकों को एक साथ देखा जाए। इस जटिल अंतःक्रिया को समझे बिना मूल्य शिक्षा की प्रभावी योजना संभव नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे संतुलित, संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण करना होना चाहिए जो सामाजिक नैतिकता और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ कर सकें।

निष्कर्ष

इस समग्र अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा और जीवन-मूल्य एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। शिक्षा केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं, बल्कि मूल्य-निर्माण की सतत प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के व्यवहार, दृष्टिकोण और सामाजिक उत्तरदायित्व को दिशा देती है। मुरादाबाद जनपद के हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के तुलनात्मक विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि दोनों समूहों में मूलभूत मानवीय मूल्य समान रूप से विद्यमान हैं, किंतु उनकी प्राथमिकता, अभिव्यक्ति और स्वरूप में अंतर देखा जा सकता है। अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में उपलब्धि, आत्मनिर्देशन, प्रतिस्पर्धा और आर्थिक आकांक्षा से जुड़े मूल्य अधिक स्पष्ट रूप से उभरते हैं, जबकि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों में सहयोग, सामुदायिकता, संतोष, परंपरा और सामाजिक समरसता से जुड़े मूल्य अधिक प्रमुख दिखाई देते हैं। यह अंतर

केवल भाषा माध्यम का परिणाम नहीं है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक अपेक्षाओं, विद्यालयी संस्कृति और स्थानीय परिवेश के सम्मिलित प्रभाव का परिणाम है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि मूल्य निर्माण एक गतिशील प्रक्रिया है, जो बदलते सामाजिक संदर्भों, डिजिटल प्रभावों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से निरंतर प्रभावित होती रहती है। अतः शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा को केवल औपचारिक पाठ्यक्रम का अंग न मानकर विद्यालयी जीवन की संपूर्ण प्रक्रिया में समाहित करना आवश्यक है। शिक्षक, अभिभावक और नीति-निर्माता सभी को यह समझना होगा कि विद्यार्थियों में संतुलित, नैतिक और उत्तरदायी व्यक्तित्व का विकास तभी संभव है, जब शिक्षा ज्ञान के साथ-साथ जीवन-मूल्यों का भी संवाहक बने। इस प्रकार यह अध्ययन संकेत देता है कि मुरादाबाद जैसे विविध सामाजिक परिवेश में मूल्य शिक्षा को माध्यम-निरपेक्ष, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और सामाजिक वास्तविकताओं के अनुरूप विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि भविष्य की पीढ़ियाँ केवल शिक्षित ही नहीं, बल्कि मूल्यनिष्ठ और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बन सकें।

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Bourdieu, P. (2023). Cultural Capital and Education (सामाजिक-सांस्कृतिक पूँजी और शिक्षा).

Government of India. (2025). National Education Policy 2023 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2023).

Kumar, K. (2023). Political Education and Indian Society (राजनीतिक शिक्षा और भारतीय समाज).

NCERT. (2023). Value Education in Schools (विद्यालयों में मूल्य शिक्षा).

NCERT. (2025). National Curriculum Framework (NCF 2025) (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा).

Schwartz, S. H. (2024). Universals in the Content and Structure of Values (मूल्यों की विषयवस्तु और संरचना में सार्वभौमिकताएँ). Advances in Experimental Social Psychology.

Schwartz, S. H. (2024). Value theory and Educational Applications (मूल्य सिद्धांत और शैक्षिक अनुप्रयोग). Journal of Cross-Cultural Psychology.

Sharma, R. A. (2024). Educational Psychology (शिक्षा मनोविज्ञान).

Singh, R. P. (2025). Indian Philosophy of Education (भारतीय शिक्षा दर्शन).

UNESCO. (2024). Rethinking Education: Towards a Global Common Good? (शिक्षा पर पुनर्विचार: वैश्विक साझा हित की ओर?).